

— प्र *vorwärts bewegen*: ता राथंतरं प्राचीनं प्रधूनुतः *PANĀV. Br. 10, 2, 5. fortblasen*: श्रौया प्रास्तं प्रधूयेत तथा (lies यथा) तूलं द्विजातम् । तथा गङ्गावगाढस्य सर्वपापं प्रधूयेत *MBh. 13, 1800*; vgl. तस्यैषीकातूलमग्नौ प्रातं प्रहूयेतैव कास्य सर्वं पाप्मानः प्रहूयते *KuāND. Up. 5, 24, 3*. — *intens. ausschütteln, ausblasen* (den Bart): प्र षमश्रु दोधुवत् *RV. 10, 23, 1. ह-धोत् 26, 7. प्रदोधुवत्कनश्रुषु 2, 11, 17*.

— वि 1) *schütteln, hinundherbewegen; schwingen*: पिप्पलम् *RV. 5, 54, 12. शाखाम् AV. 14, 2, 19. तं तंक्मन्वीव धूनुहि 5, 22, 7. पुरो वि ह-धोत् RV. 7, 21, 4. प्रस्तरम् ĀCV. GṚHJ. 2, 5. PANĀV. Br. 6, 7, 19. श्रयहस्तं विधुन्वन् R. 2, 23, 4. RAGH. 11, 40. VARĀH. BRH. S. 88, 4. विधुतपत् 94, 18. विधुन्वतो ऽजिनानि MBh. 1, 7035. दीर्घा वेणीं विधुन्वानः साधुयुक्ते च वाससो 4, 1261. विधूतवेशा R. 5, 16, 21. विधुन्वाना भूमावालिप्य कौचकम् MBh. 4, 460. नालिनो विधुन्वन् (नभस्वान्) R. 3, 10. मृदुपवनविधूतान् — चूतवन्तान् 6, 28. KATHĀS. 6, 165. 18, 403. BṬĀG. P. 5, 6, 9. H. an. 3, 298. श्यो विधुन्वञ्च वज्रशः R. 3, 34, 4. व्यजनेन विधूयता (pass.) MBh. 3, 1772. *anfachen*: न विधूयते (श्रमिः) यावच्चारुपुटोष्ठेन वायुना 2, 1132. हृदयेन विधूयता *mit bewegtem, aufgeregtem Herzen ŚāV. 4, 29. med. sich schütteln* *ÇAT. Br. 10, 6, 4, 1*. — 2) *vertreiben, verscheuchen, entfernen, zu Nichte machen*: तिमिरं विधूयार्क इवादितः R. 3, 30, 18. ह्यस्तःस्यो कृभद्राणि विधुनोति मुहूर्तस्तमां *BṬĀG. P. 4, 2, 17. 18, 18. कपेर्विधवितुं युतिम् BHATT. 9, 28. पटुपटुनिभिर्विधूतनिद्रः (v. l. विनीतः) RAGH. (ed. Calc.) 9, 72. नागा विधुतबन्धनाः RĀGĀ-TAR. 3, 26. योगविधुतमार्त्य BṬĀG. P. 3, 33, 32. auseinanderreiben, verjagen, fortreiben, vertreiben (das obj. ein lebendes Wesen): विधूय तांस्तदा भृत्यान् — जगामानिलवेगेन पादमूलं मृतात्मनः R. 1, 34, 6. KATHĀS. 16, 98. 18, 35. 112. तान्दस्युन्विधु-नोम्यज्ञानपूर्वस्माच्च पदादधः *BṬĀG. P. 8, 11, 5. देवगृहाततः । व्याडि विधूय KATHĀS. 4, 108. विधुत in einer Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 9, Cl. 30, 32. med. von sich abschütteln*: या भूमिर्विधूनुत *AV. 5, 18, 12. 19, 11. मृषा वि धूनुते VS. 11, 18. 22, 8. अश्वं ह्वं रजो दुधुवे वि तान् AV. 12, 1, 57. देष्ट्राविलमोस्त्रीन्पिण्डान्विधूय MBh. 12, 13412. विधूय तमः AV. 13, 2, 8. KAUC. 102. अश्व इव रोमाणि विधूय पापम् KuāND. Up. 8, 13. MUND. Up. 3, 1, 3. M. 6, 85. शोकम् R. 2, 60, 22. दर्पम् 98, 31. विधूतपाप्मन् MBh. 14, 986. R. 2, 93, 13. H. an. 3, 298. BṬĀG. P. 1, 9, 42. विधुतत्रिलिङ्ग 9, 19, 23. AK. 3, 2, 56. H. 1473. *aufgeben*: विधूयान्यत् *NAISH. 1, 35*. — Vgl. विधुवन.***

— प्रवि *auseinandertreiben, verjagen*: प्रविधूयामुर्गणान्क्रव्यादास्त्रे-ण *HARIV. 10492*.

— सम् *Jmd Etwas zuschütteln, zuwerfen*: सं गा अस्मभ्यं धूनुहि *RV. 1, 10, 8. med. zusammenraffen*: समिन्द्रो रायौ वृत्तोरधूनुतं सं तोणी समु सूर्यम् *VĀLAKH. 4, 10*.

2. धू (= 1. धू) f. *das Schütteln* *Med. dh. 2*.

धूपति (धूर + पति) m. = धूपति *gapa अह्नादि zu P. 8, 2, 70. Vārt. 2*. धूक (von 1. धू) *UNĀDIS. 3, 47. m. 1) Wind UGĒVAL. — 2) Spitzbube (धूते)*. — 3) *Zeit UNĀDIRV. in Sām̐kshiptas. ÇKDr. — 4) eine bestimmte Pflanze, = वकुल NIGH. Pr.*

धूणा (धूर्णा?) *das Harz der Shorea robusta H. an. 3, 632*. — Vgl. धूनक, धूर्णा.

धूत 1) *partic. s. u. 2. धाव् und 1. धू*. — 2) *subst. Sittlichkeit WAS-III. Theil*.

SILJEW 136. 172(?).

धूतपाप (धूत + पाप) 1) *adj. der die Sünden von sich abgeschüttelt hat R. 2, 113, 20*. — 2) *adj. Sünden abschüttelnd, entfernend; तीर्थ N. pr. eines Tirtha in Bhṛgukaṅkha ÇIVA-P. in Verz. d. Oxf. H. 67, a, 22. धूतपापेश्वरतीर्थ N. pr. eines andern Tirtha ebend. 66, b, 20. धूत-पापा f. N. pr. eines Flusses MBh. 6, 325 (VP. 182). als Tochter des Vedaçiras SKANDA-P. in Verz. d. Oxf. H. 71, a, Kap. 39. धूतपापक n. N. pr. eines Tirtha ebend. N. 1*.

धूति (von 1. धू) 1) m. *parox. Schüttler, Erschütterer; von den Marut: को वो वर्षिष्ठ आ नरो दिवश्च गमश्च धूयतः । पत्नीमत्तं न धूनुय RV. 4, 37, 6. 39. 1. 64, 5. 87, 3*. — 2) m. N. pr. eines Āditja (so im Index; im Text. धूती, also von धूतिन्; wohl nur fehlerhaft für धातर) *VP. 122*. — 3) f. *das Schütteln, Hinundherbewegen, Fächeln Vop. 18, 16*.

धून *partic. s. u. 1. धू*.

धूनक m. *das Harz der Shorea robusta oder Harz überh. TRIK. 2, 6. 37. 3, 3, 384*. — Vgl. धूण, धूर्णा.

धूनन (von धून्य) 1) m. *Wind RĀGĀN. im ÇKDr. u. वात*. — 2) n. *das Schütteln* *Med. dh. 2. वस्त्र° Schol. zu TBa. 4, 173, 17. मूर्धधूननैः RĀGĀ-TAR. 6, 12*.

धून्य (von धून), धूनयति (ते) *P. 7, 3, 37. Vārt. 1. Vop. 18, 12. gilt für das caus. von 1. धू, fällt aber in der Bedeutung mit diesem zusammen; schütteln, hinundherbewegen*: (एनम्) धूनयामास वेगेन वायुश्चाण्ड इव हुमम् *MBh. 3, 444 = 4, 760. KAVIRAH. zu P. 7, 3, 37. न चापि धूनये-त्केशान्वाससी न च धूनयेत् MĀRK. P. 34, 53. यथा शल्यकवानाबुः पदं धू-नयते सदा MBh. 12, 3307*.

— अथ *dass.*: न पादेन स्पृशेदन्नं न चैतदधूनयेत् *M. 3, 229*. — Vgl. अवधूनन.

— वि *Jmd hart zusetzen*: दोषान्विधूयणाच्छत्रोः परपत्तान्विधूनयेत् *MBh. 12, 4361. चक्रोत्तिष्ठेन रजसा रावणं स व्यधूनयत् R. 6, 90, 10. साय-कैस्तं व्यधूनयत् 11*. — Vgl. विधूनन.

धूनि (von 1. धू) f. *das Schütteln* *DURGĀD. zu KAVIKALPADR. ÇKDr.*

धूप m. (sg. und pl.) *Räucherwerk und der beim Verbrennen von Räucherwerk aufsteigende Rauch TRIK. 2, 6, 38. H. 649. KĀTU. 36, 14. ĀCV. GṚHJ. 4, 7. JĀGĒ. 1, 231. 298. MBh. 2, 733. 3, 14498. 13, 4714. fgg. R. 1, 3, 15. 2, 71, 35. 114, 10. Suçr. 1, 16, 9. 71, 6. 2, 294, 9. धूपोष्मणा त्या-जितमार्द्रभावं केशात्तम् KUMĀRAS. 7, 14. MEGH. 33. RAGH. 16, 50. धूपैर्जाल-विनिःसृतेः VIR. 43. VARĀH. BRH. S. 12, 18. 24, 6. PANĀT. 199, 19. BṬĀG. P. 1, 11, 16. 4, 21, 1. 26, 12*. — Wohl desselben Ursprungs wie धूम. Vgl. कृत्रिम°, कृत°, ख°, देव°, वृक°.

धूपक m. 1) = धूप in कृत्रिमधूपक (s. u. कृत्रिमधूप); am Ende eines *adj. comp.*: धूपपात्रैः सधूपकैः *R. 1, 73, 20*. — 2) (von धूप oder धूपय) *Be-reiter von künstlich gemischtem Räucherwerk R. 2, 83, 13; vgl. धूपिक*.

धूपन (von धूप्य) n. = अनुवासन *H. an. 3, 24. Med. n. 229. das Räuchern KĀTU. ÇR. 16, 4, 13. 26, 1, 27. MBh. 13, 4749. In der Med. Beräucherung, Fumigation: त्रण° Suçr. 1, 133, 12. 2, 3, 20. 223, 16. In den folgenden Stellen Räucherwerk, Weihrauch (m. nach ÇABDAM. im ÇKDr.) oder der beim Verbrennen derselben aufsteigende Rauch: स्त्रियश्चैनं व्यजनेद-कधूपनैः — स्पृशेयुः M. 7, 249. °धूपित MBh. 3, 7522. 12, 1389. धूपनागु-*